Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

पंजाब के रिवायति लोक संगीत की प्रमुख प्रीत-गाथाएँ एवम् गायन विधि

RAJESH KUMAR VERMA
Research Scholar, Department of Music, Panjab University, Chandigarh

सार

पंजाब की सभ्यता एवम् संस्कृति अत्यन्त विशाल व प्राचीन है। विभिन्न प्रांतों में प्रादेशिक संस्कृतियों की आवश्यकता अनुसार भिन्न-भिन्न अवसरों पर जो गीत, गाथाएँ, गाए जाते है उसे लोक संगीत के अन्तर्गत गायन शैलियों का नाम दिया जाता है। जीवन से जुड़ी प्रत्येक परिस्थितियां जब लोक संगीत के माध्यम द्वारा फूटती हैं तो स्वयं ही वह उस परिस्थितियों का समानूभूति करवाती है। पंजाब के रिवायति लोक संगीत में प्रीत-गाथाएँ अपना एक विशेष स्थान रखती हैं। बदलते समय व श्रोताओं की इच्छा अनुसार इसके गायन प्रस्तुति में परिवर्तन तो कर लिया जाता है किन्तु इसकी रिवायति लोक धुनें या धुन्नों की प्राचीनता व उनके लोक वाद्यों पर आज भी विशेष रूप में ध्यान रखा जाता है।

कुजी शब्द: पंजाब, रिवायति लोक संगीत, प्रीत-गाथाएँ।

पंजाब की सभ्यता एवम् संस्कृति अत्यन्त विशाल व प्राचीन है जिसका परमाण हमें हड़प्पा व मोहनजोदड़ो की खुदवाईयों द्वारा प्राप्त मूर्तियों से स्वयं ही मिल जाता है। यहां की सभ्यता आर्य लोगों के आगमन से भी पूर्व मानी जाती है। विभिन्न प्रांतों में प्रादेशिक संस्कृतियों की आवश्यकता अनुसार भिन्न-भिन्न अवसरों पर जो गीत, गाथाएँ, गाए जाते है उसे लोक संगीत के अन्तर्गत गायन शैलियों का नाम दिया जाता है। जीवन से जुड़ी प्रत्येक प्रस्थितियाँ जब लोक संगीत के माध्यम द्वारा फूटती हैं तो स्वयं ही वह उस प्रस्थिति का समानूभूति करवाती है।

लोक संगीत का अर्थ

लोक संगीत, लोक+ संगीत दो शब्दों का सुमेल है। लोक का अर्थ है जन समूह और संगीत गायन, वादन व नृत्य तीनों के संयोग से है। इस प्रकार लोक संगीत का अर्थ है लोगों द्वारा सृजत किया गया स्वरबद्ध और लयबद्ध संगीत। लोक संगीत लोगों की रूह होता है लोगों के जजबे, उम्मीदें इत्यादि सभी लोक गीतों में आमतौर पर सुनने को मिलते हैं। 'अमृता प्रीतम' अनुसार ''लोक गीत, लोगों की सांझी आवाज़ है। इसलिए किसी भी देश व राज्य को जानने के लिए लोक संगीत एक शुद्ध तराजू का कार्य करते हैं।''[1]

डॉ. पन्ना लाल मैदान अनुसार ''लोक संगीत की रचना या धुनें किसी एक स्थान पर बैठकर या किसी व्यक्ति विशेष द्वारा नहीं बनाई जाती, बल्कि यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी गा-गाकर सुंदर बनाई जाती है।''[2]

1 मौली ते मेंहदी, दो शब्द, पृष्ठ 136
2 मौली ते मेंहदी, दो शब्द, पृष्ठ 138

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

लोक संगीत की परिभाषाएँ

लोक शब्द का प्रयोग कोई नया नहीं है पंजाब का लोक संगीत जीवन के प्रवाह द्वारा सहज ही उत्पन्न होता है लेकिन लोक शब्द की उत्पत्ति सम्बंधी विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत पाए गए हैं।

डॉ. यशपाल शर्मा के अनुसार 'लोक शब्द का प्रयोग वैदिक काल से ही प्रचार में है। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र में भी लोक, धर्म, परिवर्तित इत्यादि का उल्लेख मिलता है। ऋग्वेद, महाराजा अशोक के शिलालेखों, मतंग मुनि के ब्रह्मदेशी, श्रीमद भगवत गीता, रामायण इत्यादि में लोक शब्द का प्रयोग विशेष रूप से किया गया है परन्तु आधुनिक अर्थ में इसके प्रयोग द्वारा इसे विशेष महत्त्व मिला है। लोक कला, लोक द्वारा इसे विशेष महत्त्व मिला है लोक कला, लोक संगीत, लोक साहित्य इत्यादि शब्दों में 'लोक' शब्द का प्रयोग आधुनिक अर्थों में लिया जाता है।''[1]

''चैम्बर शब्द कोश के अनुसार ''ऐसा कोई भी संगीत, जिसका उदगम् लोगों में हो और परम्परागत रूप में प्रवृतियों को मिला हो 'लोक' संगीत कहलाता है।''[2]

लोक संगीत का सीधा सम्बंध लोगों के साथ है वह संगीत, जो लोगों का हो, उनके द्वारा ही उत्पन्न हो और उनके जीवन में प्रयोग होने वाला हो और साधारण भाषा में लोगों की भावनाओं को प्रकट करता हो, 'लोक संगीत' कहलाता है।

लोक गाथाएँ एवम् उनका श्रेणी वर्गीकरण

पंजाब के लोक संगीत में पंजाबी लोक गाथाओं की विशेष भूमिका है। लोक गाथाएँ पंजाबी लोक संगीत का एक विशेष लोक-काव्य है। पंजाब के रिवायति लोक संगीत को पंजाब की लोक गाथाओं ने अमर किया है। लोक गाथाएँ मौखिक परम्परा के आधार पर चलती आ रही यथार्थक ऐतिहासिक घटनाओं पर विकसित की गई एक कथा एवम् कहानी है जिसे गायन रूप में प्रस्तुत किया जाता है। बेशक लोक गाथाओं में स्पष्ट व सीधे रूप में कोई उपदेश नहीं होता परन्तु अस्पष्ट रूप लोक गाथाएँ कुछ न कुछ संदेश अवश्य देती हैं।

लोक-गाथाओं की श्रेणी वर्गीकरण के सम्बंध में विद्वान चार प्रकार का वर्गीकरण मानते है। साहित्य कोश अनुसार लोक गाथाओं के वर्गीकरण में लोक गाथाओं के चार विशेष रूप माने गए हैः

- प्रीत (प्रेम) गाथाएँ
- वीर गाथाएँ
- ऐतिहासिक गाथाएँ
- मिथिहासिक गाथाएँ

प्रीत (प्रेम) गाथा

पंजाबी लोक गाथाओं में से सबसे महत्वपूर्ण रूप 'प्रीत गाथाएँ' है। इसमें किसी प्रेमी-प्रेमीका के प्यार का चित्रण होता है जैसे हीर-रांझा, सोहणी-महीवाल, मिर्जा-साहिबा, सस्सी-पुन्नू इत्यादि। गाथा, गीत में गायन की जाने वाली एक कहानी

1 डॉ. यशपाल शर्मा, गायन कला, पृष्ठ-46
2 डॉ. दीपिका वालिया, संगीत कला और विविध आयाम, पृष्ठ-9

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

है जिसे लोक कथा से लोक गाथा माना जाता है। यहां हमारा विषय प्रीत गाथाएँ होने के कारण पंजाब की प्रमुख प्रीत गाथाओं की कथा व इतिहास इस प्रकार माना जाता है।

(1) मिरजा-साहिबा

मिरजा-साहिबा की लोक गाथा पंजाब की लोकप्रिय गाथाओं में से एक है। मिरजा-साहिबा की कहानी को रचने वाले पहले कवि पीलू थे और आपने इस कविमई गायन विद्या को छंद रूप में लिखा था।[1] पीलू के बाद के किस्साकार हाफिज़ बरखुरदार और अहिमयार ने भी इस गायन विद्या के बारे में लिखा है।[2]

सियालकोट के राजपूत खीवे खां के घर साहिबां का जन्म हुआ था। उधर मिरजे का जन्म दानाबाद में वंझल परिवार में हुआ था। मिरजे का मामा खीवे खाँ माहनी का सरदार था। इस प्रकार साहिबां मिरजे के मामे की लड़की थी।[3] दोनों को पढ़ने के लिए एक ही पाठशाला में डाला गया और वहाँ से इस कहानी का आरम्भ होता है।

समय बीतता चलता गया और दोनों का साथ प्यार में तबदील होता गया। इस प्यार की महक फैलती गई और इसी समय साहिबा की मँगनी चन्दड़ खानदान के एक लड़के ताहिर खाँ से कर दी गई। शादी के दिन दोनों बक्की (मिरजे की घोड़ी का नाम) पर स्वार होकर भाग निकले। दोनों का पीछा किया गया। जब पीछा करते हुए साहिबां के भाई नज़दीक आए तो साहिबां द्वारा अपने भाइयों को बचाने के लिए साहिबां ने मिरजे द्वारा तरकष जन्ड पर लटका दिया। सियालों की ओर से आया एक तीर मिरजे की जान ले गया। तीरों से मारा हुआ मिरजा बुरी तरह ज़ख्मी ज़मीन पर गिरता है और साहिबां से आखिरी शिकवा इस प्रकार से करता है कि यदि साहिबा ने उसके तीरों को जन्ड़ पर ना लटकाया होता तो उसने सियालों के सभी चन्दड़ मार देने थे।

जट्ट चढदे मिर्जे खांण नू,
वड्डी भाभी लैंदी थम्म
वे मैं कदे न दिओर वंगारिया
वे तूं कदे न आएयो कम।

जे तू चलिया भुखा दुध दा,
वे मैं बुरियां देवां बन्न
जे तूं चलिया विआह करवाण नूं
मेरे पेके लै चल जनन।

गायन विधि

मिरजा ज़्यादातर पीलू राग में गाया जाता है। इसमें ढाईया ताल का प्रयोग होता है, जो सबसे पुरानी विद्या है। कुछ गायक इस गायन को 7 मात्राओं में गाते हैं और कुछ 14 मात्राओं में गाते हैं।[1] इस गायन विद्या के साथ ढोल, तुम्बी, चिमटा,

1 रत्न सिंह जग्गी (सं.) साहित कोश, पृ. 469
2 सुरिन्द्र सिंह कोहली (सं.) पंजाबी साहित्य कोश (भाग-4), पृ. 244
3 डॉ. सत्येन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान, पृ. 113-121

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

अलगोज़े आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। परन्तु आज कल यह युवक अवसरों का शृंगार बन चुके हैं। इस लिए इस गायन शैली के साथ वर्तमान समय में हारमोनियम का प्रयोग भी देखने को मिलता है। इस गायन शैली को तार सप्तक में गाया जाता है। सहायक वाद्यों और गायक के कंठ के गुणों के अनुसार ही गायक के स्वर की स्थापना की जाती है। ताल वाद्यों की सहायता से इस गायन शैली को बांध लिया जाता है। मिरजे का एक और गायन प्रकार देखने और सुनने को मिलता है, जिसकी सारी धुन बिना ताल के होती है और सम्पूर्ण गायन विद्या को अनिबद्ध रूप में पेश किया जाता है। एक बार स्थाई गाने के बाद अंतरे को दोहराया जाता है।

(2) हीर रांझा

हीर-राँझा पंजाब की एक सुप्रसिद्ध लोक गाथा है। यह लोक काव्य को विभिन्न कवियों द्वारा अपने-अपने ढंग से लिखा गया। जिनमें 'वारिस शाह' द्वारा रचित हीर लोकप्रिय व माननीय है। पुराने समय के लेखकों एवं विद्वानों ने इस प्रीत गाथा का समय 1452 ई. माना है। हीर का जन्म झन्ग सियाल के इलाके में एवं चूचक के घर में हुआ था और तख्त हज़ारे के किसान मौजू के सात पुत्र थे। सबसे छोटे का नाम धीदो था, जिसको सुंदरता की मिसाल कहा जाता था और लोग उसको रांझा कहते थे। भाइयों की नफरत का शिकार रांझा घर से निकल गया था। हीर रांझे को पलंग पर देखकर बहुत परेशान हुई परन्तु उसकी सुंदरता और वंजली पर वह मोहित हो जाती है।

''डोली चड़दे मारियां हीर चीकां,
मैंनू लै चले बावला लै चले।
मैंनू रख लै अपने कोल बाबल,
डोली छत कहार भी ले चले वे।।
साणूं बोल्यां चाल्यां माफ करना,
पंज रोज़ तेरे घर रह चले,
तेरी छतर छावें रख हेठ बाबल,
झट बांग मुसाफरां वे चले वे।।''[2]

गायन विधि

इस को गाने के लिये भैरवी व मिश्र भैरवी राग की धुन में गाया जाता है। इस गायन शैली के निबद्ध और अनिबद्ध दोनों रूपों में गाया जाता है। इस गायन के साथ वंझली, डफ आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है। गायक पहले एक स्वर पर आलाप लेकर गाते हैं और बाद में डफ की थाप के उपरांत इस गायन शैली का आरंम्भ होता है। कभी कभी चलती ताल को हीर गायन के बोल उठा कर गायन आरम्भ किया जाता है। ढाड़ी गायक हीर गायन को कली गायन शैली के रूप में पेश करते हैं और वाद्यों में ढढ, घुँघरू ओर सारंगी का प्रयोग करते है। इस गायन विधा को पेश करने के लिये दो या तीन कलाकार पेश करते है।

---

1 डॉ. गुरनाम सिंह, पंजाबी लोक संगीत विरासत, भाग प्रथम, पृ. 342-343
2 डॉ. अरविन्द शर्मा, पंजाब का लोक संगीत, पृष्ठ 21-22

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

(3) सोहनी-महीवाल

सोहनी-महीवाल का किस्सा लिखने वाले अनेक कवि हुए हैं जैसे- हाशम, कादरयार, अहिमदयार, और भगवान सिंह आदि। परन्तु फिर भी फ़जल शाह का सोहनी-महीवाल किस्सा अति लोक प्रिय है।

गुजरात शहर में एक तुला नाम का कुम्हार रहता था, उसकी बहुत सुन्दर कन्या थी जिसका नाम सोहनी था। तुला नाम के घुम्हार की अपने क्षेत्र में बहुत अच्छी पहचान थी। सभी उसकी तारीफ करते थे। दूसरी तरफ एक अमीर सौदागर 'अली' के घर बड़ी मन्नतों के बाद एक पुत्र 'इज्ज़त बेग' ने जन्म लिया जो आगे चल कर महीवाल कहलाया। जवान होने पर व्यापार के लिये वह गुजरात आया। सोहनी को देखते ही वह अपना दिल उसको दे बैठा। बर्तन खरीदने के बहाने वह सोहनी को देखने को आता और वह हर रोज़ महँगे वर्तन खरीदकर सोहनी को सस्ते दामों में बेच देता था। इस प्रकार उसने अपनी सारी दौलत खत्म करली और वह तुले के घर का कर्ज़दार बन गया, अपना कर्ज़ा उतारते के लिये उसने तुले के घर में नौकर बनकर रहने का फैसला कर लिया। जब तुले को सोहनी और महीवाल के प्रेम का पता चला तो उसने अपनी पुत्री की मँगनी रलियाला नगर में अपने भतीजे से कर दी।

सोहनी महीवाल से मिलने घड़े के माध्यम से नदी पार करके महीवाल को मिलने आती थी। परन्तु सोहनी के बारे में उसकी ननाण और उसकी सास को पता चल गया था और उन्होनें उसका घड़ा बदल दिया था। जब वह महीवाल से मिलने के नदी पार करके आ रही थी तो कच्चे घड़े के कारण सोहनी डूबने लगी। दूसरी तरफ महीवाल उसको देखकर झनाव नदि में छलांग लगा देता है और सोहनी के गले लगकर अपना शरीर छोड़ देता है। इस मोहब्बत की दास्ताँ को अलग अलग कवियों ने अपने-अपने ढंग से व्यक्त किया है। जिसे अलग-अलग गायकों ने अपने अपने ढंग से गाया है, जैसेः

कच्चा गुरु ना फडियो वे लोको,
सोहनी वक्त डुबन ते केंहदी
कच्चा वसीला कदी पार ना लांदा,
सोहणी वक्त डुबन ते केंहदी
पक्का गुरु फड लैंदी जे लोको,
अज मिलनों जुदा क्यों रेंहदी।

गायन विधि

सोहनी महीवाल की पंक्तियों को लम्बी हेक लगाकर गाया जाता है। इस गायन शैली से सम्बंधित लोकगीत निबद्ध और अनिबद्ध रूप में गाये जाते हैं। सोहनी महीवाल की धुन कहरवा ताल में दुगुन एवं चौगुन लय में सुनने को मिलती है। गायक अपनी आवाज़ की तारता एवं तीव्रता के अनुसार वाद्यों को सुर करते हैं। इस गायन शैली की स्वर संगतियों को मध्य सप्तक के पंचम के स्वरों के ऊपर तार सप्तक के स्वरों की ओर मिलाया जाता है। इस गायन शैली के साथ सहायक वाद्यों के अन्तर्गत तुम्बी, अलगोज़े, ढोल, ढोलकी एवं खंजरी आदि वाद्य प्रयोग किये जाते हैं। तुम्बी अलगोज़े वाले गायन में कम से कम तीन और ज़्यादा से ज़्यादा चार गायक एवं वादक इस शैली का प्रस्तुतिकरण करते हैं। इस गायन के

Hill Quest: A Multidisciplinary, National Peer-Reviewed/Referred Journal
ISSN 2454-3144 (O)
Volume 09, Issue 02, May 2022 (Special Issue)
http://hillquest.pratibha-spandan.org

आरम्भ में सबसे पहले लम्बी हेक लगाई जाती है। उसके उपरांत स्वर वाद्यों पर ताल सहित कुछ स्वर संगतियों के टुकड़े बजाये जाते है जिससे इस गायन शैली में और भी रंजकता सुनने में अच्छी लगती है।

(4) सस्सी पुन्नू

सस्सी पुन्नू का किस्सा हाशम के किस्सों में से बहुत प्रसिद्ध है। ''इसका प्राचीन खरड़ा 1839 ई में मिलता है। हाशम शाह की कविता एक सम्पूर्ण कविता है और इसमें 126 बंद है।''[1]

शहर भम्बोर के राजा आतम जाम के घर का तय और तेज माना हुआ था। परन्तु उसके घर कोई संन्तान ही नहीं थी। पीरों फकीरों की बहुत मन्नतों के उपरांत उसके घर एक बहुत सुन्दर कन्या ने जन्म लिया। जिसका नाम उसके चेहरे के नूर को देखकर सस्सी रख गया ज्योतिषों ने यह भविष्यवाणी की वह जवान होकर सच्चे इश्क के कारण बदनामी का कारण बनेगी और कुल को दाग लगाएगी। इस डर से सस्सी को दरिया में फेंक दिया गया वह कन्या एक धोबी को मिली, जिसका पालन-पोषण बहुत प्यार एवं सम्मान से किया गया। जवान होने पर सस्सी की मुलाकात पुन्नू से हुई। आखिर में दोनों प्रेमियों का मिलन हुआ। दोनों ही एक दूसरे से मिलने से दुनियाँ को भूलने लगे। एक दिन पुन्नू के भाई पुन्नू को नशे में लथ-पथ ऊँट पर लाद कर ले गये। उसने 12-14 घन्टे के लिये उसकी सुद्ध-भूद्ध गँवा दी।

अगले दिन सस्सी पुन्नू को वहाँ ना देखकर बहुत परेशान हुई, मारूथलों की तपश में सस्सी को अपनी जान देनी पड़ी। देखते देखते सस्सी की जान निकल गई। कुछ दिनों बाद पुन्नू को होश आया तो वह सीधा सस्सी की तरफ भागा और सस्सी की कबर पर जाकर उसने भी अपने प्राण तयाग दिये।

''रात पई, बहि पास पुन्नू दे,
जीब मिठठी, दिल काले
होत पुन्नू नू मौत सस्सी दी,
भर भर देन प्याले।।''[2]

गायन विधि

सस्सी पुन्नू की धुन मध्य लय में गाई जाती है। इस गायन का वहन मध्य सप्तक से तार सप्तक तक चलता रहता है। इस गायन शैली के साथ बांसुरी, ढोलक, डफ, खंजरी, चिमटा, घुँघरू आदि वाद्यों का प्रयोग होता है। इस गायन शैली के साथ कहरवा ताल बजाया जाता है। इस गायन के आरम्भ में सबसे पहले छोटा सा आलाप होता है और गायक गायन का आरम्भ में अपने मुख्य स्वर का विशेष ध्यान रखते हैं।

(5) मलकी-कीमा

मलकी-मीका की प्रीत गाथा मुगल सम्राट अकबर के समय की गाथा है। इसका समय सन् 1556-1605 ई तक माना जाता है। 'मलकी' गढ मुग्लाणें के सरदार 'राय मुबारक' की पुत्री थी। मलकी का चाचा मलकी की शादी 'अकबर' के साथ करवानी चाहता था परन्तु मलकी के पिता ने 'तख्त हजारे' के कीमें के साथ उसकी शादी का मन बना रखा था।

1 डॉ. गुरनाम, पंजाबी लोक संगीत विरासत, पृष्ठ-251-57
2 डॉ. गुरदीप सिंह सन्धू, लोकयान और सस्सी कवि, पृ. 92

तख्त हजारे के मालक रांझा, कीमें का चाचा लगता थ। मलकी के साथ शादी करवाने की इच्छा में कीमें को जेल भी जाना पड़ा, बेशक बाद में अकबर ने उसे छोड़ दिया और वह मलकी के साथ शादी कर अत्यंत प्रसन्न हुआ।

''मलकी खूह दे उत्तों भरदी पई सी पानी
कीमा घोलिया के बेनती गुजारे
लम्मा पैंड़ा राही मरगे नी प्यासे
दो घुट्ट पानी दे पिलाप दे नी मुटिआरे।''[1]

गायन विधि

यह लड़का एवम् लड़की घोड़ी रूप में गाई जाने वाली गाथा है। इसमें तूंबी, चिमटा, ढोल, ढोलक, खंगरी, अलगाजे इत्यादि वाद्यों का प्रयोग किया जाता हैं। इसे मध्यलय के कहरवा ताल में गाया जाता है।

प्रीत गाथाओं के नामवर कलाकार

पंजाबी लोक संगीत की इन प्रीत गाथाओं के आधुनिक कलाकारों में लाल चंद यमला जट्ट, आसां सिंह मस्ताना, कुलदीप मानक, मुहम्मद आलम लुहार, सुरिन्द्र छिंदा, मुहम्मद सदीक, हरभजन मान, सुरिन्द्र कौर, प्रकाश कौर, गुरमीत बावा, मनप्रीत अख्तर, जगमोहन कौर, नरिन्द्र बीबा, सुख्खी बराड, डोली गुलेरीया विशेष माने जाते हैं।

निष्कर्ष

लोक-संगीत की इन प्रीत गाथाओं का अपना एक विशेष स्थान है। बहत बार बदलते समय व श्रोताओं की इच्छा अनुसार इसके गायन प्रस्तुति में परिवर्तन तो कर लिया जाता है किन्तु इसकी रिवायति लोक धुनें या धुन्नों की प्राचीनता व उनके लोक वाद्यों पर आज भी विशेष रूप में ध्यान रखा जाता है।

संदर्भ ग्रंथ

धनकर, रीता (2003) हरियाणा एवम् पंजाब का संगीत परम्परा, संजय प्रकाशन, दिल्ली।
गुरनाम सिंह (2005) पंजाबी लोक संगीत विरासत, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला।
अरविंद शर्मा (2011) पंजाब का लोक संगीत, संजय प्रकाशन, दिल्ली।
सभ्याचार पत्रिका(2013) लोक संगीत अंक, पब्लिकेशन ब्यूरो, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला।

साक्षात्कार

भक्तअली, पटियाला (पंजाब)
शौकत अली मलेई, मलेरकोटला (पंजाब)

1 मस्तअली से भेंट वार्तालाप द्वारा सुना गया मलकी कींमा, तिथि 20.12.2018

ERROR: syntaxerror
OFFENDING COMMAND: --nostringval--

STACK:

/Title
()
/Subject
(D:20220623224443+05’30’)
/ModDate
()
/Keywords
(PDFCreator Version 0.9.5)
/Creator
(D:20220623224443+05’30’)
/CreationDate
(ASUS)
/Author
-mark-